

पा० 17
पाठ

**पशा षंकुन्ति
पणा संक्रांति**

अन्जित् : आजि ओडिआबालाङ्कर 'पशा षंकुन्ति' अठे । एहि उम्बुबकु 'विशुब षंकुन्ति' मध्ये कुद्धन्ति । आजि परा 'रत्नगिरि'रे 'विशुब मिलन' हेतुच्छि । तू क'ण 'विशुब मिलन' देखिबा पाइँ केवे 'रत्नगिरि' याइथिल कि?

आभास : नाँ, म्हुँ केभे मध्ये 'विशुब मिलन' देखिनाहीँ ।

अन्जित् : आजि चाल । येठि 'निथाँझामु' देखिबू । देखिबू, येठि केमिटि जलन्ता निथाँरे लोके चालिबे । मेळाकु बहुत किणा-विकाबाला आसन्ति । पाहाड़ उपरकू गोटाए उठाणि राष्ट्रा याइच्छि । ता' दि पाखरे घुरुरकमर दोकान । रातिरे किणिबाबालाङ्कर उडि जमिब । महाकाल मन्दिर, बोक्त्र मूर्ति

अजित : आज ओडिआबालों का 'पणा संक्रांति' है । इस् उत्सव को 'विषुब संक्रांति' भी कहते हैं । आज 'रत्नगिरि' में 'विषुब मिलन' हो रहा है । क्या तुम 'विषुब मिलन' देखने केलिए 'रत्नगिरि' गए थे ?

आभास : नहीं, मैंने कभी भी 'विषुब मिलन' नहीं देखा है ।

अजित : आज चल । वहाँ 'निथाँझामु' देखोगे । वहाँ देखोगे (कि) कैसे जलती आग पर लोग चलेंगे । मेले में बहुत बेचने-खरीदनेवाले आते हैं । पहाड़ के ऊपर जाने केलिए एक आरोही रास्ता है । उसके दोनों तरफ हर प्रकार की दुकानें हैं । रात में खरीदनेवालों की भीड़ लगेगी । महाकाल मंदिर, बुद्ध मूर्तियाँ और बहुत सारे स्तूप बिजली से आलोकित रहेंगे ।

- ओ पूप गुढ़िक बिन्दुलि
आलुअरे आलोकित हृद |
- आभास : मोा बोଉ आजि थकालू
'लिलितगिरि' धाइट्रु । बଡ़
थाइ बि 'उदयगिरि' मेलाकु
यिबे । मूँ घर छाड़ि थिबि
केमिटि ?
- अन्धित : हूँ, आजि थकाले माउसील्लू
उ मूँ धाइथिबार देखिट्रु ।
क'ण माउसा नाहान्ति कि ?
- आभास : बापाङ्गर कलिकटा यिबा
दुरुमाए छोइगला । घरे
आजि केहि नाहान्ति । मोाते
सबु किट्रु देखाशुणा
करिबाकु पछुट्रु ।
- अन्धित : आजि रातिरे घेठिकि पाला
गाथाण आसुछन्ति । गायकं
ठाहाण पालिआ बଡ़
कहिलाबाला । घेठारे
गाउणा बाउणा हृद ।
आमे घाङ्ग द्वाइ यिबा ।
- आभास : नाह्ति, मूँ धाइ पारिकि
नाह्ति । कालि कलेजिरे
आमर छंगाजी पढ़ा आरम्
हृद । घेठिकि गले
कलेजिकु धाइ हृद
नाह्ति ।
- आभास : मेरी माँ आज सुबह ही 'लिलितगिरि'
गई हैं । बड़े भाइ भी 'उदयगिरि' मेले
को जाएँगे । मैं घर छोड़ कर कैसे
जाऊँगा?
- अजित : हाँ, मैं ने आज सुबह मौसी को जाते
हुए देखा है । क्या मौसाजी नहीं हैं ?
- आभास : पिताजी (का) कलकत्ते गए दो महीने
हो गए । आज घर में कोई नहीं है ।
मुझे सब का देखरेख करनी पड़ती
है ।
- अजित : आज रात को वहाँ 'पाला गाहाण'
आ रहे हैं । गायक के दाहिने ओर
जो रहते हैं वे बड़े बोलनेवाले हैं ।
वहाँ गाना-बजाना होगा । हम साथ-
साथ चलेंगे ।
- आभास : नहीं, मैं नहीं जा सकूँगा । कल
कॉलेज में हमारी अँग्रेजी की पढ़ाई
आरंभ होगी । वहाँ जाने से कॉलेज
जाना संभव नहीं होगा ।
- अजित : मुझे अकेले जाना अच्छा नहीं
लगेगा ।
- आभास : तुम तो कल केलिए पढ़ना-लिखना
खत्म करके आए हो । लेकिन मैंने
कुछ भी पढ़ाई नहीं की । क्षमा
कीजिए(गा), भाई साहब । मैं इस
बार मेले के लिए नहीं जा सकूँगा ।

- अनित : मोाटे एकुटिआ यिबाकु
भल लागिब नाहिै ।
- आराष : उमे कालि पाइँ लेखा
पढ़ा थारि आष्टिछु । किन्तु मूँ
किन्तु पढ़ापड़ि करिनाहिै ।
क्षमा करिब उच । एथर
मेला पाइँ याउ पारिकि
नाहिै ।
- अनित : गठबर्ष रत्नगिरि-बोक्ककार्गी
देखिबाकु जापान्, थाइलाण्ड,
मेन्मार्गु लोक
आष्टिले । आम उष्मब ओ
मेला देखिबा पाइँ
बर्तमान मध्य बहुत लोक
अछुन्ति । येमाने एथर
मध्य दूर दूर रु आष्टिबे ।
किन्तु तु आनि पर्वपन्तु एठे
पाखरे थाउ मध्य मेला
देखि पारिल नाहिै ।
- आराष : इएठ यरु इतिहास । गठ
कथाकु भावि आउ लाउ
कण ? मो पाइँ मोर
बर्तमान ओ उविष्टहिै
सर्वस्य अठे ।
- अनित : आरे! तु त उरि
कुहाकिआ द्होउ गलुणि ।
पाठुआ पिलाङ्गु रुझेउव
क'ण ? ठिक अछु माउषा
- अजित : पिछले वर्ष रत्नगिरि-बौद्धकीर्ति
देखने के लिए जापान, म्यानमार,
थाइलैण्ड आदि देशों से बहुत लोग
आए थे । हमारे उत्सव तथा मेला
देखनेवाले अभी भी बहुत हैं । वे इस
बार भी दूर दूर से आएँगे । लेकिन
तुमने आज तक इतनी पास रहने
पर भी मेला नहीं देखा है । यह बड़े
दुर्भाग्य की बात है ।
- आभास : यह सब इतिहास है । बीती बातों के
बारे में सोचने से क्या फायदा? मेरे
लिए अपना वर्तमान और भविष्यत्
ही सर्वस्व है ।
- अजित : अरे ! तू तो बहुत बोलनेवाला हो
गया है । पढ़ेलिखों को कैसे
समझाना ? ठीक है । मौसी के आने
पर ही तेरी बात बनेगी ।
- आभास : अच्छा भाई, पान की गिलौरी तो
खाओ ?
- अजित : मैं पान खानेवाला नहीं हूँ । पान
खाना एक खराब अभ्यास है । यह
तो तू जाननेवाला है ।
- आभास : ठीक है । शाम को हमारे घर जरूर
आना ।

आषनु तो कथा
पछि ब ।

आराष : हृषि भाइ, पान खण्डे
खाइ याथ ?
अनित : मूँ पान खाइबाबाला नूह्रे ।
पान खाइबा एक खराप
अचूपास । इष्ट तु
जाणिबाबाला ।

आराष : ठिक् अछि, घंघ देलकु
आम घरकु निश्चय आयि ब ।
अनित : तु त मो याङ्गरे
आषिबाबाला नूह्रे । मूँ क'श
पाइँ आषिबि ?

आराष : आरे भाइ, मूँ त
यिबाबाला । तु एते शाय्य
रागियाउरहु काहिँकि ?

अनित : मूँ त रागिबाबाला नूह्रे ।
मूँ तो विश्वयूरे घट
कहिलि ।

आराष : मूँ तुमकु उल भाबरे
जाणिछि । बर्तमान मूँ
याउछि । यन्धाबेले तुम
घरकु निश्चय आयिबि । आमे
याङ्ग द्होइ मेला
देखिबाकु यिबा ।

अजित : तू तो मेरे साथ आनेवाला नहीं है । मैं
किसलिए आऊँ ?

आभास : अरे भाई साहब, मैं तो जानेवाला हूँ ।
तुम क्यों इतनी जल्दी गुस्सा करते
हो ?

अजित : मैं तो गुस्साकरनेवाला नहीं हूँ । मैंने
तेरे बारे मैं सच ही बोला ।

आभास : मैं तुमको अच्छी तरह जानता हूँ ।
अभि मैं जाता हूँ । शामको तेरे घर
अवश्य आऊँगा । हम साथ साथ मेले
देखने जाएँगे ।

हात्त्वार्थ

ओड़िआ शब्द	हिंदी अर्थ
ଓଡ଼ିଆବାଲା	ଓଡ଼ିଆ ଲୋଗ
ମେଳା	ମେଲା
ବିଶୁବ ମିଳନ	'ବିଷୁବ ମିଳନ'
ବିଶୁବ ସଂକ୍ରାନ୍ତି	'ବିଷୁବ ସଂକ୍ରାନ୍ତି'
ନିଆଁଝାମୁ	'ନିଆଁଝାମୁ' (ଆଗ ପର ଚଲନା)
ବୌଦ୍ଧ ମୂର୍ତ୍ତି	ବୌଦ୍ଧ ମୂର୍ତ୍ତି
ସୁପ	ସ୍ନୂପ
ଉଳନ୍ତା ନିଆଁ	ଜଲତୀ ଆଗ
ଦୋକାନୀ	ଦୁକାନଦାର
ଉଠାଣି ରାସ୍ତା	ଆରୋହୀ ରାସ୍ତା
ପାଖ	ତରଫ
ରକମ	କିର୍ମ/ପ୍ରକାର
କିଣିବା	ଖରୀଦନା
ଦେଖାଣୁଣା	ଦେଖ-ଭାଲ
ସାଙ୍ଗହେବା	ସାଥ ହୋନା
ଏକୁଟିଆ	ଅକେଲା
ଲେଖାପଡ଼ା	ପଢ଼-ଲିଖ
ପଡ଼ାପଡ଼ି	ପଢ଼ନା
ଗତକଥା	ବିତୀ ବାରେ
କୁହାଳିଆ	ବୋଲନେବାଲା, ବାତୁନୀ, ଵାଚାଲ
ପାଠୁଆ ପିଲା	ପଢେ ହୁଏ ବଚ୍ଚୋ
କଥା ପଡ଼ିବା	ବାତ ବନେଗି
ଦୁର୍ଭାଗ୍ୟ	ଦୁର୍ଭାଗ୍ୟ
ଖଣ୍ଡ	ଏକ (ଗିଲୌରୀ)
ଯିବାଲୋକ	ଜାନେବାଲା
ନିଷ୍ଟେ	ଜର୍ର

किणिबिकाबाला	खरीदने-बेचनेवाले
कम्पिलाबाला	बातूनी
किणिबाबाला	खरीददार, ग्राहक
गायक	गानेवाला

अभ्यास

I. (1) नीचे दिए गए वाक्य दोहराइए।

1. आम ओଡिशार मेला उत्थव देखिबाबाला बहुत अछुन्ति।
2. कठक बालियात्रारे किणिबिकाबाला आयिबे।
3. तु त मो घाङ्गरे आयिबाबाला नुहेँ।
4. नाँ, मूँ पान खाइबाबाला नुहेँ।
5. मूँ त राटिबाबाला नुहेँ।
6. ओଡिशाबाला 'पशाएंकान्ति' कु 'विशु घंकान्ति' मध्ये कुहन्ति।
7. ओଡिआबाला दुर्गापूजाकु जाकजकमरे पालन करन्ति।
8. महाशूरबालाङ्कर दुर्गापूजा विशुप्रविन्द अटे।
9. पढ़िबाबालाङ्कर उविष्यत उद्धुल अटे।
10. तु त भारि कहिलाबाला।
11. तु क'ण मेलाकु यिबाबाला मध्येरु जेणे कि ?

(2)

1. मोते सबुकिछि देखाशूणा करिबाकु पहुचि।
2. तुमे सबु लेखापड़ा यारि आयित्रु।
3. आमर शिआपिआ यरिलाणि।
4. ईआ बाहुआररे क'ण क'ण दिआनिआ हेला ?
5. मोते प्रतिदिन स्कूलकु यिबा आयिबा करिबाकु पहुचि।
6. आजि आम कूलरे गाउणा बाउणा हेब।

(3)

1. मूँ किछि पढ़ापढ़ि करिनाहूँ।
2. तुमे किछि लेखालेखि करिनाहूँ।
3. घेमाने हृसाहृसि हेउहुन्ति।
4. परीक्षारे देखादेखि ह्लाइ लेख नाहूँ।

5. मरामरि होइ येमाने रक्ताक्तु हैलेणी ।
6. पिला दुषज्जन हात धराधरि होइ आसुच्छन्ति ।

II. नीचे दिए गए प्रश्न तथा उन के उत्तर दोहराइए ।

1. उठाणि रास्ते केउँआडे याइत्ति ?
2. उठाणि रास्ते पाहाडे उपरकु याइत्ति ।
3. दोकानरे केउँमानझर बेशी उड़ि ?
4. दोकानरे किंशिवाबालाङ्गर बेशी उड़ि ।
5. काहार कलिकता यिवा दुषमास होइगला ?
6. बापाङ्गर कलिकता यिवा दुषमास होइगला ।
7. किए भारि कुहालिआ होइगलाणी ?
8. आउस भारि कुहालिआ होइगलाणी ।
9. केउँट्कु बिदेशी देखणाहारी आसुच्छन्ति ?
10. रड्डुगिरिकु बिदेशी देखणाहारी आसुच्छन्ति ।

III. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए ।

1. मो गोडे _____ निथाँरे पोडिगला । (ठलन्ता, ऊळन्ता)
2. पाहाडे उपरू उल्कु गोटिए _____ रास्ता अहू । (उठाणि, गढ़ाणि)
3. ए दोकानर _____ किए ? (दोकान, दोकानी)
4. येगाबाबू ऊशे _____ लोक । (कुहालिआ, कुहा)
5. कथारे अहू _____ पूअर भाग नाहीँ । (शोइबा, शूआ)
6. घजात ! _____ कथा गलाणी । (याउथिबा, गला)

IV. नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए ।

1. आजि आम गाँरे नाटवालाङ्गर उड़ि हैब । (यात्रा)
2. गाथांवालाङ्गर आजि रातिरे प्रेग्राम अहू । (पाला)
3. यिवावालाङ्गर येठिकु यिवा उचित् । (शूणिबा)
4. दोकानवालाङ्गर उलभाबे देखिबा उचित् । (देखिबा)
5. नाचवालाङ्गर बिदाकि देइदिआ । (बाजा)

V. कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थक ओडिशा शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे किजिए।

1. तुमें _____ पूलकु छुड़ाओ नाहि८। (हिलते हुए)
2. पिठा _____ ज्ञू पिठा दिअ। (खानेवालों को)
3. भाइज्जर कानपूर _____ माघे द्वाइगला। (गए)
4. कालि आम ओଡ़िआ _____ शेष हैब। (पढ़ाई)
5. मूर्ख पिलाङ्ग अपेक्षा _____ पिलाङ्गु बुझेइबा कक्ष। (पढ़े-लिखे)

VI. उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों के निषेध वाचक रूप बनाइए।

उदाहरण:- हँ, मूँ रड्डिरि मेलाकु यिबि।
नँ, मूँ रड्डिरि मेलाकु यिबि नाहि८।

1. हँ, बोछ मूर्खगुड़िक बिन्नुलि आलुअरे यजा हैब।
2. हँ, बोछ आजि लिलिगिरि याइछु।
3. हँ, कालि आमर ऊराजी पढ़ा आरम् हैब।
4. हँ, मेलाकु बहुत दोकानी आयिछुन्ति।
5. हँ, मूँ कालि पाइँ लेखा पढ़ा यारि आयिछु।
6. हँ, मूँ तुम कथा मानिबि।

VII. कोष्ठक में दिए गए प्रश्नवाचक शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर प्रत्येक वाक्य के तीन-तीन प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

(क'श, केतेबेले, केउँ०रे, काहै८कि, काहाकु, काहार, केमिति, केउँमानज्जर, केबे)

उदाहरण:- आजि रड्डिरिरे बिशुब मिलन हैउछ्ति।
- केबे रड्डिरिरे बिशुब मेलन हैउछ्ति ?
- आजि केउँ०रे बिशुब मिलन हैउछ्ति ?
- आजि रड्डिरिरे क'श हैउछ्ति ?

1. कालि गाँरे किणिबागालाङ्गर उड़ उमिब।
2. बोछ आजि यकालु लिलिगिरि याइछु।
3. कालि आमर ओଡ़िआ पढ़ा आरम् हैब।
4. आजि यकालु माउसीङ्गु मूँ मन्दिर याउथिबार देखिछु।

5. कालि बाणीबिहाररे यात्राबालाङ्कर प्रोग्राम् अनु० ।

VII. उदाहरण के अनुसार, उपयुक्त स्थान पर, दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्यों का विस्तार कीजिए ।

उदाहरण:- घेमाने निर्थारे चालिबे । (जलन्ता)
घेमाने जलन्ता निर्थारे चालिबे ।

1. गाढ़िति राष्ट्रारे ज्ञाररे चालूहि । (गढ़ाणि)
2. राष्ट्रारे भारि उड़ि । (प्रवावालाङ्कर)
3. नाचिबापिलामाने ओड़िशी नाच नाचिबे । (रबीम्ब्रमण्डपरे)
4. आनि बिशुब मिलन हेतुहि । (रहन्नगिरिरे)
5. घेमाने किटि जाणन्ति नाहिँ । (लेखापढ़ा)

VIII. उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए ।

उदाहरण:- अमोल् द्विया गीत गाउहि ।
अमोल् द्विया गीत गाइबाबाला अठे ।

1. मो बापा कुन्तुला कुमारीक विषयूरे जाणित्तुन्ति ।
2. घरघुणा रामायृण उल बोले ।
3. कुञ्जुम उल भाबरे ओड़िशी नृत्य नाचे ।
4. मो बड़ भाई ओड़िआरे कविता लेखन्ति ।
5. मूँ एथर मेलाकु यिबि ।
6. मूँ रागिबि ।

IX. नीचे दिए गए वाक्य युग्मों को मिला कर एक एक वाक्य बनाइए ।

उदाहरण:- आनि घकाले माउषीकु मूँ देखित्ति ।
ऐ मन्दिर याउथिले ।
आनि घकाले माउषीकु मन्दिर याउथिबार मूँ देखित्ति ।

1. आनि घकाले राजाकु मूँ देखित्ति ।
ऐ दिल्ली याउथिले ।
2. पहुरदिन अपाङ्कु मूँ देखित्ति ।

ऐ लाइब्रेरी याउथिले ।

3. कालि रातिरे गोपलबाबुज्जु मूँ देखिछि ।
ऐ बहु देउथिले ।
4. रविबार दिन पिलामानज्जु मूँ देखिछि ।
पिलामाने नदि कानन याउथिले ।
5. घोमबार दिन बापाज्जु मूँ देखिछि ।
ऐ लिंगराज मन्दिर याउथिले ।

पढ़िए और समझिए

ଓଡ଼ିଶାରେ ଜଗନ୍ନାଥ ଧର୍ମ ଓ ସଂସ୍କୃତି ଆଭିଶାରେ ଜଗନ୍ନାଥ ଧର୍ମ ଓ ସଂସ୍କୃତି

ଓଡ଼ିଆରେ ଏକ କଥା ଅଛି ଯେ, "ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ ସ୍ଥାମୀ ନୟନ ପଥ ଗାମୀ
ଉବ ତୁମେ" । ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପବିତ୍ର ଓ ରମଣୀୟ ଲୀଳାକ୍ଷେତ୍ର ପୁରୀ ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ର,
ନୀଳାଚଳ, ପୁରୁଷୋରମକ୍ଷେତ୍ର, ନୀଳଗିରି, ନୀଳାଦ୍ରୀ, ଶଙ୍କଷେତ୍ର ଇତ୍ୟାଦି ନାମରେ ବିଦିତ ।
ଚତୁର୍ଦ୍ଵାରା ମଧ୍ୟରୁ ପୁରୀ ଅନ୍ୟତମ ଧାମ ରୂପରେ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଲାଭ କରିଛି । ପୁଣି ଜଗନ୍ନାଥ
ବହୁ ନାମରେ ବିଦିତ । ଚକାଡ଼ୋଳା, ମହପ୍ରଭୁ, ପତିତପାବନ, କଳାଶ୍ରୀମୁଖ, ବଡ଼ ଠାକୁର,
ବଡ଼ଦିଆଁ ଓ କାଳିଆ ଇତ୍ୟାଦି ।

ଓଡ଼ିଆବାଲାଙ୍କ ମତରେ ଯୁଗେ ଯୁଗେ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ବିଦ୍ୟମାନ । ଜଗନ୍ନାଥ ଧର୍ମ
ଓ ଜଗନ୍ନାଥ ସଂସ୍କୃତି ଆମର ଏହିହୃଦୟ । ଜଗନ୍ନାଥ କୁହେଲିକାମୟ, ଚିର ରହସ୍ୟମୟ । ତେଣୁ
ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ତରୁ ପ୍ରକାଶ କରିବା ସହଜସାଧ୍ୟ ନୁହେଁ । ଜଗନ୍ନାଥ ଧର୍ମ ହେଉଛି ସର୍ବ ଧର୍ମ
ସମନ୍ୟ ଓ ଓଡ଼ିଆ ଜୀବିର ସଂସ୍କୃତି । ଓଡ଼ିଆ ଜୀବି ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କୁ ଏକାନ୍ତ ଆତ୍ମୀୟ
ମନେକରି ସାଂସାରିକ ସୁଖ ଦୁଃଖ ଜଣାଏ । ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ଓଡ଼ିଆ ଜୀବିର ଅନ୍ତରଂଗ

देवता। जैन, बौद्ध, बैश्वव, शाक्त, श्रीजैनाथके प्रेम उक्ति धर्म ओ दर्शनकु नेत उगनाथ निजर नैलालयरे पठितपाबन वाना उड़ाउ रत्नस्थिंहासनरे बिजे करिछन्ति। केतेक गवेषक बौद्धधर्म एमुक्ति त्रिरत्न (बूद्ध, धर्म, संघ) एहित श्रीजैनाथ, बलभद्र, सुभद्रा त्रिमूर्ति यामंजस्य देखन्ति। आउ केतेक कृष्णजैर भाइ ओ उद्दीप्तीकु उगनाथ, बलभद्र ओ सुभद्रा बोलि कहन्ति। उगनाथ प१० शेव, शाक्त ओ बैश्वव एहि चिनि धर्म मठबाबर यमन्यू प१०। उगनाथ हैउछन्ति एकाधारारे नैलमाधव, श्रीनृसिंह, श्रीराम, श्रीकृष्ण ओ श्रीपूरुषोरम। उगनाथक 'रथयात्रा' जातीयू एतिहाय सूचक स्त्रारकी यात्रा। यामाजिक द्वाला ओ यन्त्रशारु मुक्ति खोद्दुथिबा अगणित उक्तमानकु प्रभु 'रथयात्रा' दिन दर्शन देइ दूष्मेनोचन करन्ति। उगनाथ परमपरारे जातिभेद वा अस्त्रशृंखला नाहिँ। चण्डाल, ब्राह्मण, पापी, नैत, पश्चित, मूर्ख यमस्तु यात्रा उगनाथक करुणा दृष्टि यमभाबरे अहिँ। ये हैउछन्ति उक्तर उगनाथ। श्रीजैनाथ चण्डालर देवता, ब्राह्मणर देवता, राजार देवता, प्रनार देवता, उनतार देवता यर्गोपरि ओढिशार गणदेवता ओ संस्कृतिर देयातक। ओढिशार पंरपरा अनुसारे बिबाह पूर्वरु उगनाथकु आग निमन्त्रण पत्र दिआयाए।

ओढिशार संस्कृति, उनजीवन ओ धर्मपरि ओढिआ याहित्यरे श्रीजैनाथक चेतनार धारा प्रवाहित। ओढिआ याहित्यरे यारला दायक ठारु आगम् करि आनि पर्यान्त येते उक्ति मूलक रचना ताहा उगनाथक उपरे वर्णित होइछि। यारला दाय प्रथम ओढिआ कवि ये, उगनाथ ओ कृष्णक मध्यरे अवेदन्त परिकल्पना करिछन्ति।

ओढिशारे बिभिन्न धर्मर अभ्युत्थान घटिछि। यथा :- बैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, शेव धर्म, शाक्त धर्म, नाथ धर्म, बैश्वव धर्म, महिमा धर्म ओ उगनाथ धर्म प्रत्यक्षि यस्तु मठबाबद्युषिक श्रीजैनाथकोरे यर्गधर्म यमन्ति होइ उगनाथ धर्म ओ संस्कृतिर उपरि होइअहिँ।

सांकेतिक

ओडिआ शब्द
श्रीजैनाथ
पवित्र

हिंदी अर्थ
श्री जगन्नाथ
पवित्र, पुण्य, पावन

ରମଣୀୟ	रमणीय
ଲୀଳାକ୍ଷେତ୍ର	लीलाक्षेत्र
ପୁରୀ ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ର	पुरी श्रीक्षेत्र
ନୀଳାଚଳ	नीलाचल
ପୁରୁଷୋତ୍ତମ କ୍ଷେତ୍ର	पुरुषोत्तम क्षेत्र
ନୀଳଗିରି	नीलगिरि
ନୀଳାଦ୍ରୀ	नीलाद्री
ଶଂଖକ୍ଷେତ୍ର	शंख क्षेत्र
ବିଦିତ	चारों ओर
ଚତୁର୍ଦ୍ଧାମ	चारोंधाम
ପ୍ରସିଦ୍ଧି ପାନା, ବିଖ୍ୟାତ ହୋନା	प्रसिद्धि पାନା, ବିଖ୍ୟାତ ହୋନା
ଧର୍ମ	धर्म
ସଂସ୍କୃତି	संস्कृति
ଏତିହ୍ୟ	ऐतିହ୍ୟ
କୁହ୍ରେଳିକାମୀୟ	ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟଜନକ
ରହସ୍ୟମଯ	ରହସ୍ୟମଯ
ତତ୍ତ୍ଵ	ତତ୍ତ୍ଵ
ଉଦ୍ଘାଟନ	ଉଦ୍ଘାଟନ
ଆସାନୀ ସେ	ଆସାନୀ ସେ
ସର୍ବ ଧର୍ମ ସମନ୍ୱୟ	ସର୍ବ ଧର୍ମ ଏକ ହୋନା
ଏକାନ୍ତ ଆତ୍ମୀୟ	ଏକାଂତ ନିଜଶ୍ଵ
ସାଂସାରିକ ସୁଖଦୂଃଖ	ସଂସାର କା ସୁଖଦୁଃଖ
ଅନ୍ତରଂଗ ଦେବତା	ଅଂତରଂଗ ଭଗବାନ
ବିଶ୍ୱାସର ପ୍ରାଣକେନ୍ଦ୍ର	ଵିଶ୍ୱାସ କା ପ୍ରାଣକେନ୍ଦ୍ର
ଜୈନ	ଜୈନ (ଧର୍ମ)
ବୌଦ୍ଧ	ବୌଦ୍ଧ (ଧର୍ମ)
ଶାକ୍ତ	ଶାକ୍ତ (ଏକ ପ୍ରକାର କା ଧର୍ମ)

ଶ୍ରୀଚେତନ୍ୟ	श्री चैतन्य (जगन्नाथ का परम भक्त)
ରତ୍ନ ସିଂହାସନ	ରତ୍ନ ସିଂହାସନ (ଜଗନ୍ନାଥ କା ସିଂହାସନ)
ବିଦେ କରିଛୁନ୍ତି	ପ୍ରକାଶ କରନା
ଡ୍ରିରତ୍ନ	ତୀନ ରତ୍ନ
ବଳଭଦ୍ର	ବଲଭଦ୍ର (ଜଗନ୍ନାଥ କେ ବଡ଼ାଭାଈ)
ସୁଭଦ୍ରା	ସୁଭଦ୍ରା (ଜଗନ୍ନାଥ କୀ ଛୋଟୀ ବହନ)
ତ୍ରିମୂର୍ତ୍ତି	ତୀନ ମୂର୍ତ୍ତି
ଧାମଙ୍ଗଣ୍ୟ	ସମାନତା
ଦ୍ଵାରକାନାଥ	ଦ୍ଵାରକାନାଥ
ଜାତୀୟ ଐତିହ୍ୟ ଶୂଚକ	एକ ଜାତି କେ ଐତିହ୍ୟ କା ସୂଚକ
ଘାରକୀ ଧାତ୍ରୀ	ଯାଦ କରନେ ଲାଯକ ଯାତ୍ରା
ଧାମାଜିକ ଦ୍ଵାଳା ଓ ଧନ୍ଦଶା	ସାମାଜିକ ଜ୍ଵାଳା ତଥା କଷ୍ଟ
ମୁକ୍ତି ଖୋଦୁଥିବା	ସ୍ଵତଂତ୍ରତା ଖୋଜନେବାଲା
ଅଗଣିତ ଭକ୍ତୁ	ଭକ୍ତ ଜୋ ଗିନେ ନହିଁ ଜା ସକ୍ତେ
ଦର୍ଶନ	ଦର୍ଶନ
ଦୁଃଖମୋହନ	ଦୁଃଖ କା ହରଣ କରନେବାଲା
ପରଂପରା	ପରଂପରା
ଜାତିଭେଦ	ଜାତିଭେଦ
ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ	ଅସ୍ପୃଶ୍ୟତା
ଚଣ୍ଡାଳ	ଚାଂଡ଼ାଳ
ବ୍ରାହ୍ମଣ	ବ୍ରାହ୍ମଣ
ନୀଚ	ନୀଚ, ଛୋଟା
ପଣ୍ଡିତ	ପଣ୍ଡିତ, ଜ୍ଞାନୀ
ମୁଖ	ମୁଖ
କରୁଣା	ଦୟା
ଗଣ ଧର୍ମ	ଗଣ ଧର୍ମ

संगृष्टि	संस्कृति का द्योतक
विवाह पूर्वरू	शादी के पहले
निमन्त्रण पत्र	निमंत्रण पत्र
चेतनार धारा	चेतना की धारा
पर्यावरणि	स्थित
अद्वेदद्	भेद नहीं
अभ्युत्थान	अभ्युत्थान
अनुरूपी	विलीन हो जाना
समन्वित रूपरे	समान रूप से

अध्यास

I. अनुच्छेद के अनुसार नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. श्री जगन्नाथज्ञ लीलाक्षेत्र कि कि नामरे बिदित ?
2. श्री जगन्नाथज्ञ अन्य नाम एवु क'ण ?
3. ओडिआवालाङ्गर क'ण एक्षित्वाय ?
4. किए कुहेलिकामय ? ओ चिर रहस्यमय ?
5. जगन्नाथ धर्म क'ण ?
6. ओडिआ जातिर अनुरक्षा देवता किए ?
7. केउमाने चौष धर्म यमुक्ति त्रिरत्न (रुद्र, धर्म, यंग) एक्षित श्रीजगन्नाथ, बलभद्र, सुखद्रा त्रिमूर्ति रे सामर्ज्यमय देखन्ति ?
8. केउ ओ नेट्रि धर्म जगन्नाथ धर्मर यमन्त्र प्राप्त ?
9. श्री जगन्नाथ एकाधाररे क'ण क'ण ?
10. क'ण पाइँ केउमान्ज्ञ प्रभु श्रीजगन्नाथ 'रथयात्रा' दिन दर्शन देइ दूषणमोठन करन्ति ?
11. ओडिशार गणधर्म क'ण ?
12. किए चण्डीकर देवता, ग्राहकर देवता, राजार देवता, प्रजार देवता, जनतार देवता एर्बोपरि ओडिशार गण देवता ओ यंगृष्टि देयातक ?

13. बिवाह पूर्वी उगनाथज्ञ क'श दिआयाए ?
14. केरँ कवि उगनाथज्ञ उक्तिमूलक रचना वर्णना करिछुन्ति ?
15. किए उगनाथ ओ कृष्णज्ञ मध्येरे अछेदत्तु परिकल्पना करिछुन्ति ?
16. केरँ केरँ धर्म श्रीउगनाथ धर्मरे अनुर्लीन होइच्छि ?

II. अनुच्छेद के आधार पर दिए गए प्रत्येक शब्द समूह के शब्दों को ठीक क्रम में लाकर वाक्य बनाइए।

1. बिद्यमान, यूगेयूगे, श्री उगनाथ, ओडिआबालाङ्क, मठरे
2. एवं धर्म, उगनाथ, एमनूयू, धर्म हेतु, ओडिआ जातिर, ओ, धर्म ओ एंसूटि
3. एमनूयू प10, धर्म मठबादर, एहि तिनि, शेष, शाक्त ओ बैष्णव, उपासना, उगनाथ
4. परंपरारे, जातिभेद नाहिँ, उगनाथज्ञ, असृष्ट्यता, वा
5. उनजीबन, ओडिआ, श्रीउगनाथज्ञ प्रवाहित, ओडिशार एंसूटि, ओ धर्मपरि, चेतनार धारा, ओ धर्मपरि

III. नीचे दिए गए कथनों को अनुच्छेद में वर्णित क्रम में क्रमबद्ध कीजिए।

1. ओडिआजाति श्रीउगनाथज्ञ एकान्तु आत्मायू बोलि मनेकरि सांसारिक युग दूषण ज्ञाए।
2. उगनाथ ओडिआ बायीज्ञ धर्म ओ बिश्वासर प्राणकेन्द्र।
3. जैन, बौद्ध, बैष्णव, शाक्त, श्रीचेतनयज्ञ प्रेमभक्ति धर्म ओ दर्शनकु उगनाथ निजर करि नीलाचलर पतितपाबन बाना उड़ाइ रत्नसिंहासनरे बिजे करिछुन्ति।
4. उगनाथ धर्म ओ उगनाथ एंसूटि आमर झोटिह्य।
5. उगनाथ परंपरारे जातिभेद वा असृष्ट्यता नाहिँ।
6. ओडिशार एंसूटि, उनजीबन ओ धर्मपरि ओडिआ साहित्येरे श्री उगनाथज्ञ चेतनार धारा प्रवाहित।
7. चण्डाल, ब्राह्मण, एमसू पापी, नीच, पश्चित, मूर्ख एमसूज्ञ प्रति उगनाथज्ञ

करुणा

दृष्टि समरावरे अहि ।

8. उगनाथ धर्म हेतुहि सर्व धर्म समन्वय ओ ओडिआ जातिर धर्म ओ संस्कृति ।
9. गरिधामरु श्रीउगनाथ धाम अन्यतम ।
10. प्रथम ओडिआ कवि ये, उगनाथ ओ कृष्णज मध्यरे अरेदहु परिकल्पना करिछन्ति ।

IV. हिंदी में अनुवाद कीजिए।

भारत बर्षर बिभिन्न देश प्रदेशर ओ मातृभाषार लोके दशहृतापूजाकु आढ़मूर उहुकारे पालन करिथान्ति । एहि उहुबकु समग्र देशरे बिभिन्न नाम ओ रूपरे पूजा आराधना करायाइथाए । ओडिआबाला ओ कलिकटाबाला मध्य एक दुर्गापूजाकु
दृष्टि
धूमधामरे पालन करन्ति ।

महाशूरर दशहृता उहुब सारादेशरे हि नुहेँ, देश बाहुरे मध्य सुप्रसिद्ध अठे । केरलर लोकमाने एहि उहुबकु सरस्वती पूजा रूपरे पालन करन्ति । पिलामानंकर एहि समयरे हि बिद्या आरम्भ हुए । मलयालवाला मध्य एहि उहुब दिन पिलामानकर बिद्या आरम्भ करिथान्ति । महाशूरर महाराजांक समयरे एहि उहुब बहु धूमधामरे जाकजकमरे पालन करुथिले ।

बंगलाबाला आउ ओडिआबाला दुर्गापूजा समयरे निज निज राज्यकु आसिबाकु चाहान्ति । उहुररे श्लाने श्लाने मृश्यां दुर्गांकर सुन्दर मण्डप तिआरि करि पूजा करायाइथाए ।

हिमाचल प्रदेशरे लाहूल ओ स्त्रियरे मध्य दुर्गापूजा पालित हुए । आजिकालि ओडिशारे रूपामेडि एवं गोटिए सुनामेडि तिआरि हेतुहि ।

भारतरे शक्तिर आराधना बहु प्राचीन । एहि शक्ति पूजाहि मातृपूजा । देबातामाने आपशार समीक्षित शक्ति द्वारा एहि मातृशक्तिर गठन करिथिले । महाशास्त्ररकु बिनाश करिबा पाल्ल एहि अद्येय एवं अपराजिय मातृशक्तिर परिकल्पना । देबा भागबतरे देबीकर बिभिन्न प्राचीन वर्णना संगे संगे देबीकर रूप अर्जना एवं पूजा विषयरे बहुतथ्य दिआयाइछु । मा दुर्गा देबा

पूर्णि राम न्यूंक आराधनारे दुष्ट होइ राबणबन्ध निमिर तांकु आर्शीबाद देइथिले।

एहि दिनमानज्जर समस्ते नूआलुगा पिछन्ति। दुर्गापूजा समयारे चारिआडे नृत्यगीत एवं अभिनय द्वारा एहि उम्हावर पालन करायाइथाए। एहिदिन किशिबाबाला, बिकाबाला ओ बुलिबाबालांकर प्रबल भिड दूर्घ। प्रतेकलोक बुलिबुलि ओ खालेखाल एहि उम्हावर कु खुयिरे कठाइथान्ति। दशदिनर एहि दुर्गा पूजा शेषरे राबणपोडि उम्हावर पालित होइथाए। प्राय ९० फूट उच्चर राबणमूर्ति देहरे रामबेश होइथिबा बप्कुद्वारा मरायाइथिबा शररे एहि बाण गुडिक छलि उठिथाए। येठारे जिमा होइथिबा लक्ष लक्ष लोक एहि दृश्यकु देखिथाआन्ति। दशमी पूजा प्रदीन उक्षाणी पर्व अनुष्टुत होइथाए। प्राप्तेवन् करि बाजा बजाइ एहि मूर्ति गुडिकु नदीरे विसर्जन करायाइथाए। एहि विसर्जन देखिबाकु दृज्ञार दृज्ञार लोक एकत्र होइथान्ति। कोटिकोटि प्राणकु गोटिए शूद्ररे गुन्हीबाकु एहाही एकमात्र पूजा।

V. ओडिआ में अनुवाद कीजिए।

अगले सोमवार हमारे कॉलेज का वार्षिकोत्सव है। पूरे दिन विविध प्रकार के कार्यक्रम होंगे। सुबह आठ बजे से कार्यक्रम शुरु होना है। बहुत लोग आनेवाले हैं। भाग लेनेवाले सिर्फ अभि कॉलेज में पढ़नेवाले नहीं हैं। कॉलेज के कई पुराने विद्यार्थी भी आएँगे। उन में भिन्न भिन्न काम करनेवाले होते हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, व्यापारी, नर्तक, नर्तकियाँ, गानेवाले, सरकारी तथा अन्य दफ्तरों में काम करनेवाले पुस्तकां की रचना करनेवाले जैसे जीवन के कई क्षेत्रों में से बहुत लोग आनेवाले हैं। उन की एक बड़ी सभा सब कार्यक्रमों के पहले होती है। विविध प्रकार के अनुभव वे हमें बतानेवाले हैं। उन लोगों के लिए तरह तरह की स्पर्धाएँ होनीवाली हैं। वे लोग हमारे कॉलेज की उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करनेवाले हैं। उन लोगों के देन से एक बड़ा कलाभवन का आरंभोत्सव भी होनेवाला है। इस केलिए मुख्यमंत्रिजी आनेवाले हैं। पुराने विद्यार्थियों के कार्यक्रमों के बाद हमारा कार्यक्रम शुरु होनेवाला है। तरह तरह के गाना गानेवाले हमारे कॉलेज में हैं। हमारे देश के विविध राज्यों के नृत्यों का कार्यक्रम होगा। ओडिशि नृत्य तो होना ही है। इस के अलावा भरत नाट्यम्, कुच्चिपुड़ि, मणिपुरी नृत्य, कथकलि नृत्य, गिरिजनों के नृत्य ऐसे सभी तरह के नाच नाचनेवाले नर्तक-नर्तकियाँ हमारे विद्यार्थियों में हैं। इन सब को देखना एक अपूर्व आनंद ही है।

VI. अपने राज्य के किसी एक मेले का वर्णन ओडिआ में कीजिए।

टिप्पणियाँ

I. नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए।

1. 1) कालि कलेजरे आमर छंराजी
पढ़ा आरम्‌ द्वैष।
कालि कलेजरे आमर इंराजी
पढ़ा आरम्भ हैव।
- 2) मोाते थृृ किछि देखाशुणा
करिबाकु पछुछि।
मोते सबु किछि देखाशुणा
करिबाकु पड़ुछि।
2. 1) कालि द्योरे गाउणा बाउणा द्वैष।
कालि सेठारे गाउणा बाजणा हैव।
- 2) मठे पढ़िबा लेखिबा थाए।
मते पढ़िबा लेखिबा आसे।
3. 1) मूँ पान खाइबाबाला नूद्दै।
मुँ पान खाइबाबाला नुहै।
- 2) गाउरे किणिबाबालाज्जर छिड़ द्वैष।
रातिरे किणिबाबालांकर भिड़ हैव।
- 3) मूँ उ मेलाकु टिबाबालि अटे।
मुँ त मेलाकु जिबाबालि अटे।
4. 1) अनेक छागारू देखाहारी आसिछंति।
अनेक जागारु देखणाहारी आसिछंति।
5. 1) छू उ छारि कूद्हालिथा द्वैष।
तु त भारि कृहालिआ होइगलुणि।
- कल कॉलेज में हमारी अँग्रेजी की
पढ़ाई आरंभ होगा।
- मुझे सब कुछ देखा-सुना (देखभाल)
करना पड़ रहा है।
- कल वहाँ गाना बजाना होगा।
- मुझे पढ़ना लिखना आता है।
- मैं पान खानेवाला नहीं हूँ।
- रात में खरीदनेवालों का भीड़ होगा।
- मैं तो मेले को जानेवाली हूँ।
- अनेक देशों से देखेनेवाले आ रहे हैं।
- तु तो बहुत बोलनेवाला हो गया है।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित शब्दों क्रियार्थक संज्ञाएँ हैं। वाक्य (1.1,2) में मूल क्रिया के साथ '-आ' (आ) प्रत्यय जोड़ा गया है। जैसे:- पृष्ठ (पढ़) + -आ (आ) = पढ़ा, (पढ़ा) देख (देख) + -आ (आ) = देखा (देखा)।

वाक्य (2.1) के रेखांकित शब्द में मूल क्रिया के साथ यथाक्रम '-णा' (शा), '-उणा' (उणा)

प्रत्यय जोड़े गए हैं। जैसे:- '-बाज्' + '-शा' = 'बाजशा' (बाजणा), '-शा' (गा) + '-छशा' (उणा) = '-शाछशा' (गाउणा)

वाक्य (2.2) के रेखांकित शब्द 'पढ़िबा' (पढ़िबा), 'लेखिबा' (लेखिबा) मूल क्रिया के साथ '-इबा' (इबा) प्रत्यय जोड़कर बन गए हैं।

वाक्य (3.1,2,3) के रेखांकित सभी शब्दों 'खाइबा', (खाइबा), 'किहिबा', (किणिबा), 'धिबा' (जिबा) में मूल क्रिया के साथ 'बाला' (वाला), 'बालि' (वालि) 'बाले' (वाले) प्रत्यय लिंग वचन के अनुसार जोड़कर बन गए हैं।

वाक्य (1.4) के रेखांकित शब्द 'देखिबाबाला' (देखनेवाले) जैसे प्रयोग का एक वैकल्पिक रूप 'देखशाद्रागा' (देखणाहारी) का प्रयोग है।

वाक्य (1.5) के रेखांकित शब्द 'कूहृालिथा' मूल क्रिया 'कहृ' (कह) का वैकल्पिक रूप 'कूहृ' (कुहा) के साथ 'लिथा' (-लिआ) प्रत्यय जोड़कर बनाया हुआ है।

- II.**
1. देठारे छलन्तु निथाँरे वहाँ जलती आग पर लोग चलेंगे।
लेके छालिबे।
सेठारे जळता निअँरे लोके चालिबे।
 2. पाहाड़ उपरकू धिबापालँ गोटिए पहाड़ के उपर जाने के लिए एक
ठोड़ी राशा धाइछु। आरोही रास्ता है।
पाहाड़ उपरकु जिबापाइँ गोटिए
उठाणि रास्ता जाइछि।
 3. आमर घर लेउषाठि बेल द्रेलाहि। हमारे घर लौटने का समय हो गया है।
आमर घर लेउठाणि बेल हेलाणि।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित शब्द क्रियायों से जन्य विशेषण हैं। वाक्य (II.1) के रेखांकित शब्द में मूल क्रिया के साथ (-अंता) '-थन्तु' प्रत्यय जोड़ा गया है। जैसे:-

छल् + थन्तु = छलन्तु जलते हुए

जळ् + अंता = जळता

छल् + थन्तु = छलन्तु चलते हुए

चळ् + अंता = चळता

वाक्य (II.2) में रेखांकित शब्दों में मूल क्रिया के साथ (आणि) '-आहि' प्रत्यय जोड़ा गया है।

जैसे:-

-छ० + -थाणि = छ०थाणि	उपर जानेवाले (आरोही)
-उठ + -आणि = उठाणि	
-लेउठ + -थाणि = लेउठाणि	लौटना
-लेउट + -आणि = लेउटाणि	

III. पठा धंकुन्ति / चिकूव म्रिलन (पण संक्रांति / विषुबमिलन)-

ओडिशा में 'पण संक्रांति' को 'महाबिषुब संक्रांति' भी कहते हैं। इस दिन से सूर्यदेव का दक्षिणायन शुरू होता है। ओडिशावाले के नया साल का प्रारंभ भी इसी दिन से होता है। वैशाख महीने में ही यह दिन आता है। इस संक्रांति के दिन ओडिशा में 'देब देब महादेब' की पूजा सब कहीं होती है।

निथाँक्षाम् (निआँझाम्)-

पण संक्रांति के दिन जो भक्त अपना 'मानसिक' (इच्छा पुरी करने पर पूजा करने की प्रतिज्ञा) करते हैं वे भगवान के सामने आग पर चलते हैं। इसे 'निआँझाम्' कहते हैं। भक्त जो निआँझाम् करते हैं उनको 'झामुआ' कहते हैं।

रघुगिरि, लक्ष्मिगिरि, औ उद्घश्मिगिरि (रत्नगिरि, ललितगिरि, उदयगिरि)-

'रत्नगिरि, ललितगिरि, उदयगिरि' ओडिशा के तीन प्रमुख बौद्ध कीर्तिओं के पीठ हैं। वहाँ पर नालंदा का समसामयिक 'पुष्टगिरि' विश्वविद्यालय था।

धाला गाथाण (पाला गाआण)-

'पाला गाआण' ओडिशा का एक पारंपरिक सांस्कृतिक कार्यक्रम है। इस में एक मुख्य गायक, तीन सहायक गायक और एक वाद्यकार होता है। मुख्य गायक 'गाआण' या 'गाहाण' कहा जाता है। पौराणिक गाना और प्राचीन साहित्य की व्याख्या करना इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य है।